पत्रिका, भोपाल
30 JAN 2015

गांधी चंदन, गीता सुवास

शिवराज सिंह चौहान

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन ने महात्मा गांधी के बारे में कहा था कि आने वाली पीढ़ियां शायद यह विश्वास नहीं कर पाएंगी कि इस तरह का कोई हाड़-मांस का व्यक्ति इस पृथ्वी ग्रह पर रहा होगा। महात्मा गांधी थे ही ऐसे। उनकी महानता को भारत ही नहीं पूरे विश्व में माना जाता है। विश्व के महापुरुषों ने महात्मा गांधी की प्रशंसा में इसी तरह की बातें कही हैं। मार्टिन लूथर किंग ने कहा था कि गांधी इतिहास के सम्भवतः पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने ईसा की प्रेम धारणाओं को व्यक्तियों के परस्पर संबंधों से उठाकर बड़े पैमाने पर एक प्रभावकारी शक्ति बना दिया। बेंथम और मिल, मार्क्स और लेनिन तथा हाब्स, रूसो और नीत्से से मुझे जो संतोष प्राप्त नहीं हुआ, वह गांधी से प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी को महान बनाने में श्रीमद्भागवत गीता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। गीता पाठ उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था।

महात्मा गांधी गीता की स्थितप्रज्ञ की अवधारणा से सबसे अधिक प्रभावित थे। स्थितप्रज्ञ व्यक्ति हर्ष की स्थिति में हर्षित नहीं होता और दुख की स्थिति में दुखी नहीं होता। वह हार-जीत, मान-अपमान, सुख-दुख, सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि आदि किसी भी स्थिति में अपने चित्त को सम रखता है। मेरी मान्यता है कि हरेक व्यक्ति को गीता का अध्ययन करना चाहिए। यह ग्रंथ किसी व्यक्ति, धर्म या समुदाय विशेष के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक मानव के लिए है। गांधीजी पर गीता के गहरे प्रभाव को देखते हुए हम कह सकते हैं कि गांधीजी अगर चंदन हैं, तो गीता उसकी सुवास। महात्मा गांधी की पुण्य-तिथि पर उन्हें कोटि-कोटि नमन।

मुख्यमंत्री के ब्लॉग से